विस्तार पत्रिका क्र. 56

मध्यप्रदेश में पाई जाने वाली प्रमुख गोंदों की विदोहन एवं विदोहनोत्तर तकनीक

डॉ. जी. एस. मिश्रा
डॉ. धर्मेन्द्र वर्मा
सीएच. मुरलीकृष्णा

राज्य वन अनुसंधान संस्थान
पोलीपाथर, जबलपुर (म.प्र.)
2018

मध्यप्रदेश में पाई जाने वाली प्रमुख गोंदों की विदोहन एवं विदोहनोत्तर तकनीक

वित्तीय अनुदान

द्वारा

प्रधान मुख्य वन संरक्षक

(कक्ष-अनुसंधान एवं विस्तार), मध्यप्रदेश, भोपाल

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

पोलीपाथर, जबलपुर (म.प्र.)

2018

प्राक्कथन

प्राचीन काल से ही वनों के समीप रहने वाले रहवासी भोजन के लिए कन्द–मूल–फल, आवास एवं कृषि उपकरणों के लिए काष्ठ, ईंधन के लिए जलाऊ लकड़ी, रोगों का निदान करने के लिए औषधीय पादप तथा स्वयं की अन्य दैनिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने जंगल से वनोपज इकट्ठा करते रहे हैं। बाद में वे अतिरिक्त वनोपज का बाजार में विक्रय कर आय भी प्राप्त करने लगे है। मध्यप्रदेश में लघुवनोपज का संग्रहण एवं विपणन खुले बाजार में तथा निजी व्यापारियों के द्वारा संचालित होता है। ऐसी परिस्थिति में अज्ञान वश अथवा अधिक आय प्राप्त करने की लालसा में लोग बिना लाभ–हानि की परवाह किये बहुमूल्य प्रजातियों का गलत विदोहन कर उन्हे विनष्ट कर देते है। ऐसी ही स्थिति मध्यप्रदेश में पायी जानेवाली बहुउपयोगी वनोपज गोंद के साथ भी है। गोंद के संग्राहक गोंद वृक्षों से असंवहनीय एवं विनाशकारी विधि से टैपिंग कर गोंदों का संग्रहण करते है, जिसके कारण जंगल से कई प्रजातियों के गोंद वृक्षों की संख्या में भारी कमी होती जा रही है।

प्रधान मुख्य वन संरक्षक, अनुसंधान, विस्तार एवं लोक वानिकी, मध्यप्रदेश से प्राप्त वित्तीय सहायता से राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा मध्यप्रदेश में पायी जाने वाली महत्वपूर्ण गोंदों के उत्पादन एवं संग्रहण की मात्रा का ऑकलन करने का कार्य किया गया। इस अनुसंधान के निष्कर्षों के आधार पर गोंद वृक्षों में गलत टैपिंग के कारण आदिवासियों एवं अन्य गोंद संग्राहकों तथा प्राकृतिक जैवविधिता को होने वाली हानि से बचाने के लिए **"मध्यप्रदेश में पाई जाने वाली प्रमुख गोंदों की विदोहन एवं विदोहनोत्तर तकनीक"** नामक प्रचार–प्रसार मार्गदर्शिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

मध्यप्रदेश में पायी जाने वाली प्रमुख गोंदों के उत्पादन एवं संग्रहण क्षेत्रों के बारे में विभागीय कर्मचारियों, अधिकारियों, गोंद संग्राहकों, गोंद के व्यवसाय से जुड़े व्यापारियों, शोध संस्थानों एवं शोधार्थियों को इससे लाभ होगा। मार्गदर्शिका में प्रमुख गोंदों के वृक्षों यथा–सलई, गुग्गल, धावड़ा, कुल्लू, पलाश, खैर, बबूल एवं साजा आदि में वैज्ञानिक विधि से टैपिंग, गोंद संग्रहण, प्रसंस्करण, श्रेणीकरण, भण्डारण एवं विपणन की वैज्ञानिक विधियों का उल्लेख किया गया है। साथ ही यथा स्थान फोटोग्राफ आदि के माध्यम से सरलता के साथ स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। आशा है सर्व संबंधित को इसके अध्ययन से मध्यप्रदेश की इस अमूल्य वन संपदा के ग्रामीण अदिवासियों के लिए महत्व से अवगत होने तथा इनके संरक्षण और संवर्धन में कार्य करने को मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

इस मार्गदर्शिका को परिष्कृत कर परिमार्जित करने हेतु प्राप्त मार्गदर्शन एवं सुझावों के लिए मध्यप्रदेश वन विभाग से सेवा निवृत्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वर्तमान में राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में आर.सी.एफ.सी. के संचालक के पद पर अपनी सेवा प्रदान कर रहे **डा. पी. के. शुक्ला** सर तथा संस्थान के पूर्व संचालक **डॉ. धर्मेन्द्र वर्मा** सर का आभार व्यक्त करते हुए उन्हें धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

मैं आभार व्यक्त करता हूँ, **डॉ. पी. सी. दुबे**, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, अनुसंधान विस्तार एवं लोक वानिकी, सतपुड़ा भवन, भोपाल का जिन्होने इस मार्गदर्शिका के प्रकाशन के लिए अपने बहुमूल्य सुझाव दिए तथा प्रकाशित करने के लिए वित्तीय अनुदान प्रदान किया।

मैं आभार व्यक्त करता हूँ संस्थान के वर्तमान संचालक **श्री सीएच मुरलीकृष्णा** सर का जिनके अनुभव एवं सुझाव तथा दिशा निर्देश से इस मार्गदर्शिका को प्रकाशित करने का अवसर प्राप्त हुआ।

संस्थान के अपर संचालक **श्री ओ. पी. तिवारी जी** को उनके द्वारा दिये गये मार्गदर्शन के लिए आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ, संस्थान के पुस्तकालय प्रभारी श्री सूरज सिंह रघुवंशी एवं प्रलेख्य शाखा प्रभारी श्री के. एल वर्मा को, जिन्होंने अनुसंधान कार्य के लिए उपयुक्त संदर्भ ग्रन्थ उपलब्ध कराये तथा समय–समय पर मेरा उत्साह वर्धन किया।

मैं धन्यवाद देता हूँ, परियोजना के लिए स्थलीय आँकड़ों को एकत्र करने एवं आँकड़ों के विश्लेषण में सहयोग प्रदान कर चुके कनिष्ठ अध्येता श्री प्रदीप कनौजिया, क्षेत्र सहायक स्व0 श्री वीरेन्द्र सिंह बिन्द और श्री सुनील कुमार पयासी का जिनकी लगन एवं मेंहनत से परियोजना कार्य को पूर्ण कर महत्वपूर्ण तथ्यों को मार्गदर्शिका में समाहित किया जा सका। इसके साथ ही मै धन्यवाद देता हूँ संस्थान के अपने कनिष्ठ सहयोगियों श्री आलोक रैकवार, श्री विजय बहादुर सिंह एवं श्री राजेश कुमार वर्मन का जिन्होने समय–समय पर यथाउचित सहयोग प्रदान किया।

मध्यप्रदेश में गोंद उत्पादन वाले जिलों के प्रमुख व्यापारियों का भी मैं आभारी हूँ एवं उन्हें धन्यवाद देता हूँ। विशेष रूप से धन्यवाद एवं आभार व्यक्त करता हूँ, उमरिया, शिवपुरी एवं श्योपुर जिले के थोक गोंद व्यापारियों का जिन्होंने कई बार अपनी व्यावसायिक गतिविधियों में व्यस्तता के बावजूद समय निकालकर गोंद से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान की। मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ दमोह, टीकमगढ़, छिन्दवाड़ा, बैतूल, देवास, मुरैना, शिवपुरी एवं श्योपुर के आयुर्वेदिक वैद्यों का जिन्होंने महत्वपूर्ण जानकारियों से हमें अवगत कराया एवं शंकाओं का समाधान किया।

अंत में अभार व्यक्त करता हूँ मध्यप्रदेश वन विभाग के विभिन्न वन मंडलों के स्थलीय कर्मचारियों, अधिकारियों का जिन्होने अपने व्यस्त कार्यों से समय निकाल कर अपने क्षेत्र से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी दी और सामाजिक–आर्थिक सर्वेक्षण कार्य में सहयोग प्रदान किया। साथ ही धन्यवाद देता हूँ मध्यप्रदेश में गोंद उत्पादक जिलों के गोंद संग्राहकों का जिन्होने अपनी व्यस्त दैनिक दिनचर्या से समय निकाल कर इस विषय में सूक्ष्म से सूक्ष्म महत्वपूर्ण जानकारी से अवगत कराया और अपने बहुमूल्य सुझाव दिये।

(डॉ. जी. एस. मिश्रा)
शाखा प्रभारी, कृषि वानिकी

डॉ. पी.सी. दुबे, भा.व.से.
अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक
(अनुसंधान, विस्तार एवं लोक वानिकी)
सतपुड़ा भवन, भोपाल–462004 (म.प्र.)

संदेश

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा प्रदेश के जंगलों में पाई जाने वाली प्रमुख व्यावसायिक गोंदों के उत्पादन एवं संग्रहण पर अनुसंधान कर गोंद वृक्षों की हो रही कमी की ओर ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है। गैर कृषि योग्य पड़त भूमि में जलवायु के अनुसार बबूल, कुल्लू, करधई, धावड़ा के पौधे क्षेत्रीय अनुसंधान एवं विस्तार केन्द्रों की रोपणियों में तैयार कर स्थानीय लोगों को उनकी कृषि भूमि के मेड़ों तथा उन्हें खेती के लिए दी गयी वन भूमि के मेड़ों पर रोपण के लिए उपलब्ध कराये जाने चाहिए। साथ ही गोंद वाले वृक्षों से होने वाली आय के बारे में उन्हे जानकारी प्रदान की जानी चाहिए । विगत कुछ वर्षों में वन भूमि पर बढ़ते अतिक्रमण, वन भूमि के राजस्व भूमि में परिवर्तन, अधो–संरचना के विकास में वन भूमि का उपयोग आदि कारणों से जहां वन भूमि के क्षेत्रफल में कमी आयी है वही जंगल से एकत्र की जाने वाली वनोपज के अप्राकृतिक, विनाशयुक्त विदोहन से कई प्रजातियों के अस्तित्व को ही खतरा उत्पन्न हो गया है।

संस्थान द्वारा वन विभाग के क्षेत्रीय अमले, गोंद के संग्रहण एवं व्यवसाय से जुड़े समूहों, स्वयंसेवी संस्थाएं, अनुसंधानकर्ता को गोंद वृक्षों के संवहनीय विदोहन के प्रति प्रेरित करने के उद्देश्य से **''मध्यप्रदेश में पाई जाने वाली प्रमुख गोंदों की विदोहन एवं विदोहनोत्तर तकनीक'' नाम से प्रचार–प्रसाद मार्गदर्शिका** का प्रकाशन किया गया है। आशा है इस मार्गदर्शिका से प्रेरणा प्राप्त करते हुए गोंद वृक्षों की टैपिंग, संग्रहण, प्रसंस्करण, श्रेणीकरण, भण्डारण एवं विपणन में वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग कर गोंदों के सतत् विदोहन का लाभ प्राप्त करने का प्रयास किया जाएगा।

प्रदेश की प्रमुख गोंदों के संग्रहण पर आधारित प्रचार–प्रसार मार्गदर्शिका प्रस्तुत करने के लिए राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के वैज्ञानिक डॉ. जी.एस. मिश्रा को उनके उद्देश्यपूर्ण अनुसंधान प्रकाशन की सफलता के लिए ढेरों शुभकामनायें।

(डॉ. पी.सी. दुबे) भा.व.से.

सी. एच. मुरलीकृष्णा
संचालक
राज्य वन अनुसंधान संस्थान
जबलपुर (म.प्र.)

संचालक की कलम से.....

आज समय की मांग है कि सीमित संसाधनों में वैज्ञानिक तकनीक का प्रयोग कर लोग अधिक लाभ अर्जित करें तथा आय प्राप्ति की संवहनीयता को बनाए रखें। गोंद प्रकृति प्रदत्त एक बहुमूल्य उपहार है, जिसका उपयोग विभिन्न मानवीय क्रिया कलापों में आदिकाल से होता रहा है। देश में अनेक प्रकार की गोंदों पर निर्भर औद्योगिक इकाइयों में उपयोग के अतिरिक्त इसके निर्यात् द्वारा बहुमूल्य विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। जंगल के समीप रहवासियों की जीविका में प्राकृतिक राल एवं गोंद का विशेष महत्व रहा है। विगत कुछ वर्षों में गोंद की मॉग एवं कीमत में काफी वृद्धि हुई है, इस कारण संग्राहकों ने कम समय में अधिक प्राप्त करने की इच्छा के कारण गोंद वृक्षों में विनाशकारी विदोहन करना प्रारम्भ कर दिया। इसके कारण जहां एक ओर गोंद वृक्ष वनों से विलुप्त होते जा रहे है, वही दूसरी ओर वनों के समीप रहनेवाले आदिवासियों से उनके जीवन निर्वाह के स्त्रोत पर संकट उत्पन्न होने की स्थिति निर्मित होती जा रही है।

अनुसंधान, विस्तार एवं लोकवानिकी, मध्यप्रदेश के वित्तीय सहयोग से राज्य वन अनुसंधान संस्थान के द्वारा मध्यप्रदेश में गोंदों के उत्पादन/संग्रहण क्षेत्रों में गोंदों के संग्रहण एवं व्यवसाय से जुड़े लोगों का अध्ययन एवं वनों में गोंदों के संग्रहण विधियों का गहन अध्ययन किया गया है। प्रदेश के प्रमुख गोंद वृक्षों में वैज्ञानिक विधि से टैपिंग कर एवं गोंदों के सतत् विनाशविहीन विदोहन की तकनीक को **''मध्यप्रदेश में पाई जाने वाली प्रमुख गोंदों की विदोहन एवं विदोहनोत्तर तकनीक''** नाम से प्रचार–प्रसार मार्गदर्शिका का प्रकाशन किया है। आशा है इस मार्गदर्शिका से प्रेरणा प्राप्त करते हुए गोंद वृक्षों की टैपिंग, संग्रहण, प्रसंस्करण, श्रेणीकरण, भण्डारण एवं विपणन में वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग कर गोंदों के सतत् विदोहन का लाभ प्राप्त करने का प्रयास किया जाएगा। यह मार्गदर्शिका प्राथमिक संग्राहकों, वन विभाग के क्षेत्रीय अमले, गोंद के संग्रहण एवं व्यवसाय से जुड़े समूहों, स्वयंसेवी संस्थाएं, अनुसंधानकर्ताओं के लिए लाभकारी साबित होगी।

गोंदों के संग्रहण पर आधारित अनुसंधान एवं प्रचार–प्रसार मार्गदर्शिका प्रकाशित करने के लिए संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. जी. एस. मिश्रा को शुभकामना एवं बधाई।

(सी. एच. मुरलीकृष्णा) भा.व.से.